# कोचवान

डॉ॰ आनन्दी प्रसाद माथुर

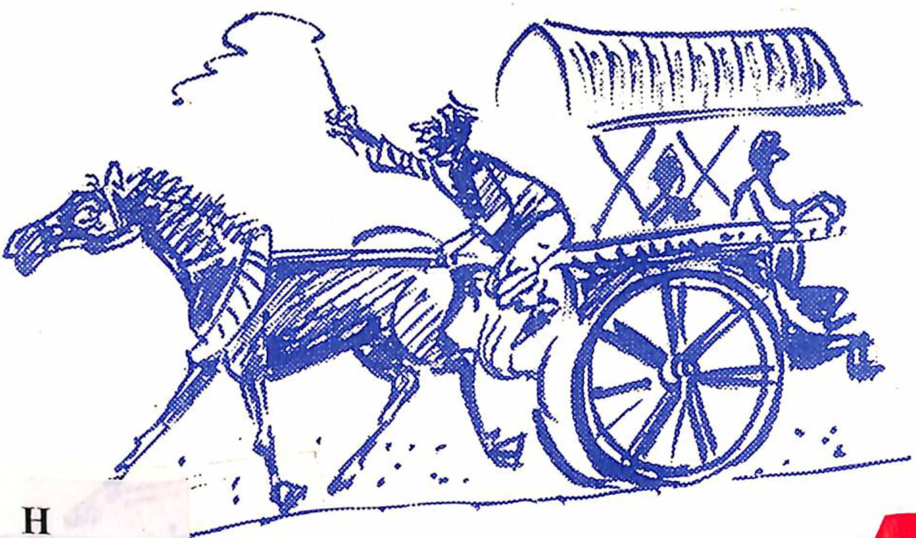

H
028.5 M 426 K

028.5
M 426 K

*INDIAN INSTITUTE*
*OF*
*ADVANCED STUDY*
*LIBRARY, SHIMLA*

# कोचवान

डॉ॰ आनन्दी प्रसाद माथुर

CATALOGUED

प्रकाशक
कवि सभा दिल्ली
दिल्ली–32

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO. 110622
DATE 14.2.2003
SHIMLA

H
028.5
M 426 K

Library IIAS, Shimla
H 028.5 M 426 K
00110622

© डॉ आनन्दी प्रसाद माथुर

प्रकाशक : कवि सभा दिल्ली
30/106, विश्वास नगर,
शाहदरा, दिल्ली –32
☎ 2055312

संस्करण : प्रथम, 2000

मूल्य : रु. 20/-

मुद्रक : आर. के. आफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

---

*Kochwan*
by
*Dr. Anandi Prasad Mathur*

# कोचवान

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सुन्दर पुर में भारी मेला लगा है। मेले में दूर–दूर से खेल–तमाशे और दुकानदार लोग पहुंचे हैं। मशहूर मेला है इसलिये जहां लाखों की संख्या में ग्रामीण स्त्री–पुरुष–बच्चे पहुंचते हैं वहीं बम्बई और पूना के शौकीन शहरी लोग भी इस मेले में पहुचते हैं।

बम्बई के रायसाहब मोहनलाल भी अपनी पत्नी मालती और इकलौती चार वर्षीय पुत्री गुड्डी को साथ लेकर मेले में पहुंचे हैं। ये लोग मेले में चारों ओर घूमते–फिरते हैं और गुड्डी को तरह–तरह के खिलौने खरीदवा रहे हैं। रायसाहब को खेल तमाशों का भी शौक है इसलिये हर खेल को देखने की कोशिश कर रहे हैं।

जिस समय रायसाहब एक स्थान से गुज़र रहे थे उस समय उन की दृष्टि एक तरफ लगी भीड़ पर पड़ी। रायसाहब ने समझा कि यह कोई बाजीगर का तमाशा होगा अतः उधर ही मुड़ गए। रायसाहब ने गुड्डी और मालती को वहीं खड़ा किया और आप यह जानने के लिए कि वहाँ कौन–सा तमाशा हो रहा है, भीड़ में घुस गए।

एक क्षण बाद ही मालती ने देखा क़ि भीड़ में भारी भगदड़ मच गई है। कोई किधर को बेतहाशा भाग रहा है और कोई किधर को। मालती घबड़ाई हुई–सी भीड़ की ओर देख रही थी कि इतने में रायसाहब भी दौड़े हुए आते दिखाई दिये। रायसाहब के माथे पर खून बह रहा था। खून देखकर मालती हक्की–बक्की हो गई और गुड्डी को छोड़ रायसाहब के उपचार में लग गई।

यह भीड़ दो दलों में आपसी झगड़ा हो जाने के कारण लग गई थी जिसे शान्ति और सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस ने लाठी

चलाकर तितर–बितर किया था।

इधर तो मालती रायसाहब के उपचार में लगी और उधर गुड्डी सामने चमकदार खिलौने वाली दुकान के सामने जा खड़ी हुई। गुड्डी उस दुकान से लौटी नहीं बल्कि आगे को ही बढ़ गई और मेले की भीड़ में खो गई।

गुड्डी परेशान हाल चारों तरफ रोती फिर रही थी कि एक बुढ्ढे राहगीर ने उसे गोदी में उठा लिया। बुढ्ढे ने गुड्डी को पुचकारा, खिलौना दिया, मिठाई खिलानी चाही लेकिन गुड्डी चुप न हुई और न अपना कुछ पता ही बता सकी।

अन्त में विवश होकर बुढ्ढा, गुड्डी को गोदी में लेकर मेले में चारों तरफ आवाज़ लगाता हुआ घूमने लगा कि यह बच्ची किसकी है?

जिस समय बुढ्ढा गुड्डी को लिये घूम रहा था उसी समय पूना के गोविन्दराय अपनी पत्नी लता सहित रेलवे स्टेशन के लिये घोड़ा गाड़ी पर बैठने को तैयार खड़े थे।

लता ने इतनी सुन्दर बच्ची को देखा तो उसने ठण्डी सांस लेते हुए अपने पति से कहा 'काश यह लड़की ही हमें मिल जाती'। गोविन्दराय ने इशारे से बुढ्ढे को अपने पास बुलाया और लता ने गुड्डी को उस की गोदी से ले लिया और गाड़ी में बैठ कर स्टेशन के लिये रवाना हो लिये।

इधर जब मालती रायसाहब के पट्टी बांध चुकी तो उसे गुड्डी का ध्यान आया लेकिन वह नदारद थी। मालती और रायसाहब दोनों घबड़ा गये और गुड्डी को ढूंढने लगे। दोनों जने पागलों की तरह हर एक से पूछते लेकिन गुड्डी नहीं मिली। थोड़ी दूर पर उनकी उस बुढ्ढे से भेंट हुई उसने उन्हें बताया कि मुझसे एक गाड़ी पर बैठने वाले मियां–बीबी ने उसे ले लिया।

यह सुनते ही मालती उन्मादियों की भाँति गाड़ियों के पीछे गुड्डी–गुड्डी चिल्लाती भागने लगी लेकिन गाड़ी में गुड्डी के न

मिलने पर हताश हो दूसरी ओर दौड़ पड़ती। दिन भर दोनों जने ढूँढते–ढूँढते परेशान हो गए किन्तु गुड्डी का कहीं पता नहीं मिला। अन्त में विवश होकर रात को घर वापिस आ गए।

घर आकर रायसाहब ने गुड्डी की तलाश जारी रखी। पुलिस को इत्तला की और नौकरों को चारों तरफ भेजा, मित्रों और रिश्तेदारों को सूचना दी और अखबारों में इनाम घोषित किया किन्तु मालती को विश्वास हो गया कि गुड्डी मिलने के लिए नहीं खोई है। मालती ने गुड़िया के बिछोह में खटिया पकड़ ली और रायसाहब की एक और परेशानी बढ़ गई। रायसाहब मालती को लेकर पहाड़ों पर चले गए।

इधर सन्तान विहीन लता और गोविन्दराम जब गुड़िया को लेकर स्टेशन और रेल से पूना आये तो दोनों ही बहुत खुश थे। गुड़िया का शुरू–शुरू में तो मन नहीं लगा लेकिन लता ने उसे ऐसा बहलाया कि वह धीरे–धीरे अपने घर की बात ही भूल चली। लता ने गुड्डी का नाम ऊषा रखा।

लता ने गुड्डी के लालन–पालन और शिक्षा में कोई कसर नहीं रखी। ऊषा की होशियारी, योग्यता, खूबसूरती और आयु तेजी के साथ बढ़ने लगी।

मैट्रिक पास हो जाने के बाद ऊषा का दाख़ला नगर के बड़े कालिज में करा दिया गया और अब वह नित्य साईकिल पर कालिज जाने लगी।

एक दिन कालिज से लौटते समय ऊषा की असावधानी से एक मोड़ पर उसकी रूपकिशोर की साईकिल से टक्कर हो गई। रूपकिशोर ने इस घटना के लिये अपनी शर्मिन्दगी प्रकट की, और उससे माफी मांगी। ऊषा अपनी ग़लती के लिए स्वयं ही शर्मिन्दा थी तिस पर रूपकिशोर की विनम्रता ने उसे पानी–पानी कर दिया।

रूपकिशोर ऊषा के कालिज का ही बी॰ एसं–सी॰ कक्षा

का विद्यार्थी था। इस घटना के बाद जब कभी रूपकिशोर ऊषा के सम्मुख पड़ता तो नमस्ते के अतिरिक्त कुछ न कहता।

ऊषा की पढ़ाई कालिज में और जारी न रह सकी क्योंकि एक दिन गोविन्दराय सप्ताह भर की बीमारी के बाद इस संसार को छोड़ कर चले गये। आमदनी का दूसरा जरिया न था। अतः विवश हो उसे कालिज छोड़ना पड़ा। गोविन्दराय के मरते ही लता पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े, उधार वालों के तक़ाज़ों और रोज़ की आवश्यकताओं ने लता के और फिर ऊषा के गहने भी समाप्त कर दिये। मकान मालिक ने मकान खाली करने का हुक्म दे दिया।

विवश हो लता, ऊषा को ले रोती–बिलखती किराये के नए–छोटे–गन्दे मकान में जा पहुंची। लाड़–प्यार से पली हुई ऊषा को देखकर लता और भी रोती। लेकिन ऊषा लता को ढांढस बंधाती, दिल क्यों छोटा करती हो। हमारे हाथ–पांव तो हैं हम पेट भरने लायक खुद कमा लेंगे।

कितने ही दफ्तरों में, स्कूलों में अपनी नौकरी की दर्खास्त भेजती। दो–चार जगह से बुलावा भी आया लेकिन कहीं पर उसका उपहास किया जाता, कहीं पर बदतमीज़ी। लता अपनी बेटी के साथ जाती है और उस से लोगों का यह व्यवहार बर्दाश्त नहीं होता। अन्त में लता ने तय किया कि तू घर में बैठी सिलाई बुनाई और कढ़ाई का काम किया कर और मैं लोगों के यहां से काम ले आया करूंगी।

पड़ोस में थोड़ी दूर पर ही रूपकिशोर के पिता डाक्टर बैजनाथ का मकान था। डाक्टरी अच्छी चलती थी। लेकिन डाक्टर स्वभाव का लोभी था। मरीजों से बुरी तरह पैसा ऐंठता। लोग उससे नाराज़ थे लेकिन होशियार होने की वजह से विवश हो कर लोग उसके पास आते।

डाक्टर के खानदान में उनकी स्त्री सुधा, बड़ा लड़का

रूपकिशोर, छोटा लड़का ब्रह्मकिशोर और सबसे छोटी लड़की मीना थे।

लता ने डाक्टर के घर का सारा काम ले लिया। अच्छी और सस्ती सिलाई, घर बैठे कपड़े आ जायें तब किसे इनकार हो सकता था। लेकिन कंजूस डाक्टर हमेशा सिलाई कम करने क़ी ताकीद करता रहता। सुधा को बातों–बातों में लता की बेबसी मालूम हो गई थी इसलिये वह सिलाई कम करने में डाक्टर का साथ नहीं देती थी।

डाक्टर अपने दोनों लड़कों को भी डाक्टर बनाना चाहता था क्योंकि वह समझता था कि इस धन्धे से पैसा खूब कमाया जा सकता है किन्तु दोनों लड़के डाक्टर के इस मत के विरोधी थे। वह डाक्टरी को पेशा नहीं मानव–सेवा को ईश्वर प्रदत्त अवसर मानते थे।

रूपकिशोर ने बी॰ एस–सी॰ के बाद कानून पढ़ना प्रारम्भ किया और ब्रह्मकिशोर ने इंजीनियरिंग।

रूपकिशोर घर पर रहता और साईकिल पर कालिज जाता लेकिन ब्रह्मकिशोर को कालिज के बोर्डिंग हाउस में ही रहना पड़ा क्योंकि वहां का ऐसा नियम था कि कोई भी लड़का शहर में न रहे।

नगर में हैजा जोरों से फैलने लगा। म्यूनिसपेलिटी, कालिज के विद्यार्थी और स्काउट यथाशक्ति लोगों की सेवा करते। रूपकिशोर भी अपने दो साथियों जयदेव और मनोहर के साथ इस सेवा कार्य में लग गया और एक नया कैम्प हौस्पिटिल खोला। नगर की सफाई, कुंओं में दवाई और मरीज़ों को हस्पताल पहुंचाने में यह लोग दिन रात एक कर देते, लेकिन बीमारी काबू में नहीं आ रही थी।

इधर रूपकिशोर के पिता डाक्टर इसे ईश्वर प्रदत्त अवसर मान रहे थे और हैज़े के मरीज से जब हाथ लगाते, जब पहिले

अपनी मेज़ पर पूरे 100 रु॰ गिनवा कर रखवा लेते। कौन जाने मरीज़ बचे या मरे। बिचारे जरूरतमंद यह भी करते।

रूपकिशोर अपने पिता को ऐसी क्रूरता न करने के लिये बहुत कहता किन्तु बदले में फटकार के अतिरिक्त और कुछ न पल्ले पड़ता।

एक दिन लता भी हैजे की चपेटे में आ गई। लता की यह हालत देख ऊषा के हाथ–पांव फूल गये। अब वह क्या करे? लता ने ऊषा से कहा, पड़ोस के डाक्टर को बुला ले– उनका काम हम लोग करते हैं शायद फीस–वीस न लें।

ऊषा दौड़ी हुई डाक्टर के घर गई। डाक्टर अपने कमरे में बैठे आराम कर रहे थे। ऊषा ने रोते हुए डाक्टर से माँ का सब हाल कहा और शीघ्र चलने की प्रार्थना की। डाक्टर ने पहिले अपनी फीस के १०० रु॰ रख देने को कहा। ऊषा रोई, गिड़गिड़ाई, पैर पकड़े और यह भी बताया कि हम लोग आपका ही काम करते हैं किन्तु डाक्टर टस से मस नहीं हुआ।

जिस समय ऊषा डाक्टर साहब से अपनी माँ की बात कह रही थी उसी समय रूपकिशोर बराबर वाले कमरे में से चुपचाप सब सुन और देख रहा था। रूपकिशोर ने ऊषा को पहिचान लिया किन्तु वह प्रकट नहीं हुआ।

ऊषा जब निराश होकर घर को वापिस चलने लगी तो रूपकिशोर घर देखने की ग़रज से चुपचाप उसके पीछे लग लिया। ऊषा को देखकर वह वापिस अपने घर आया। माँ से सभी दास्तान कह सुनाई, लेकिन माँ की समझ में काई उपाय नहीं आ रहा था। अन्त में वह अपने पिता के कमरे में गया किन्तु वे सो रहे थे। अतः उन्हें जगा कर कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी। रूपकिशोर तुरंत वापिस चल दिया। वह लता को अस्पताल ही पहुंचा देने की सोच कर चला। रास्ते में से जयदेव और मनोहर को भी साथ ले लिया और लता के घर जा पहुंचा। लता अपनी

अन्तिम घड़ी मान कर गुड्डी को बता रही थी कि जब वह चार वर्ष की थी तब सुन्दर पुर के मेले में एक बुढ्ढे भिखारी से लाई थी जो तेरे असली माता–पिता को ढूंढ रहा था। मैंने पाप किया गुड्डी, क्षमा करना।

लता अंधेरी कोठरी में एक टूटी हुई चारपाई पर फटे हुए बिछौनों पर पड़ी थी। देखने से मालूम होता था कि यह दो–चार घण्टों की ही मेहमान थी। और ऊषा निरुपाय–सी खड़ी रो रही थी इतने में ही तीनों आवाज़ देकर कोठरी में घुस गए।

रूपकिशोर ने लता की दशा देखी तो एक दम भयभीत सा हो गया। अब तो अस्पताल ले जाने लायक भी नहीं तब? रूपकिशोर वहां से एक क्षण को गायब हो गया और पिताजी की अल्मारी में से चुपचाप 100 रु॰ निकाल कर ले आया और मनोहर के हाथ में थमा दिये और फौरन अपने पिता डाक्टर को बुला लाने को कहा।

डाक्टर ने आकर इंजेक्शन लगाया। ऊषा की समझ में पहिले मना कर देना और फिर अपने आप आने का कारण समझ में नहीं आया। ऊषा रूपकिशोर को पहिचान गई थी। लता धीरे–धीरे स्वस्थ होने लगी।

8 बचे प्रातः का समय था। डाक्टर दवाखाने में बैठा था। हैज़े के बीमारों के घर वाले उन्हें ले जाने को हाथ जोड़ रहे थे, पैर छू रहे थे लेकिन डाक्टर पर कोई असर नहीं। घोड़ा घास से यारी नहीं करना चाहता। पहिले 100 रु॰ यहां रख दो पीछे बात करो।

इतने में टेलीफोन की घंटी बजी। हैलो बोर्डिंग हाउस में आपके लड़के को हैजा हो गया है। डाक्टर ने फीस, की बात्त कह कर चोगा रख दिया। पूरी बात भी नहीं सुनी और न समझा। इस तरह कितनी ही बार घन्टी बजी और डाक्टर ने पूरी बात सुने ही फीस की कहकर चोगा रख दिया। 12 बजे जब डाक्टर घर

जाने को हुआ तब फिर घण्टी बजी और लड़के को हैजा हो जाने की सूचना मिली लेकिन डाक्टर ने झुंझला कर यह कहते हुए टेलीफोन रख दिया कि मैं एक बार कह चुका बस। उसने इस बार भी पूरी बात नहीं सुनी।

संध्या को 6 बजे जब डाक्टर क्लब जाने को तैयार हो रहा था तभी स्कूल के लड़के कन्धे पर खाट रखे एक मरीज को लेकर कोठी में दाखिल हुए। डाक्टर वहीं से उन लोगों को डांटने लगा। उसने नौकरों को हुक्म दिया, निकाल दो इन कम्बख्तों को। यहां भी जर्म्स फैलायेंगे। नौकर डांटते हुए कोठी में से निकले। लड़कों ने चारपाई उतार कर वहीं रख दी। मरीज ऊपर से नीचे तक सफेद चादर से ढका हुआ था। लड़कों ने जब चारपाई नहीं उठाई तो नौकरों ने करीब पहुंच कर उन्हें डाँटा। तब एक लड़के ने नौकर को धीरे से बताया। नौकर ने मुँह खोल कर देखा और चीखता हुआ घर में घुसा। ग़ज़ब हो गया, यह छोटे बाबू हैं। कोठी में कोहराम मच गया। माँ पछाड़ें खाने लगी। डाक्टर सिर पीटने लगा। हाय मुझे इत्तला तक नहीं की। लड़कों ने बताया कि आपको कितनी ही बार टेलीफोन किया लेकिन हर बार आपने फीस की बात कह कर फोन रख दिया। रूपकिशोर भी आ चुका था। उसने यह बातें सुनी तो डाक्टर को आड़े हाथों लिया। न जाने कितनी मौतें तुम्हारे इन चाँदी के टुकड़ों के कारण हो रही हैं। लड़के की दशा देखकर डाक्टर की आँखें खुल गई। वह तुरंत उसके उपचार में लग गया।

रूपकिशोर ने मेहनत से पढ़ कर कानून पास कर ली और एक मशहूर बैरिस्टर के पास ट्रेनिंग लेकर अपनी वकालत शुरू कर दी। वह सच्चे केस ही अपने हाथ में लेता था और उस में जी जान से मेहनत करता था। रूपकिशोर को भारी सफलता प्राप्त हुई। वह ग़रीबों के सच्चे केस बिना किसी मेहनताने के कर

देता और सैकड़ों रुपये मिलने पर भी झूठे मामले में हाथ नहीं डालता। रूपकिशोर की इस सच्चाई, ईमानदारी और मेहनत की धाक जज महोदय पर भी बिना पड़े न रह सकी।

अब सिलाई आदि का अधिकतर काम लेने-देने ऊषा ही डाक्टर साहब के यहां आती और कभी-कभी रूपकिशोर से भी भेंट हो जाती किन्तु नमस्ते के अतिरिक्त दोनों में से कोई भी कुछ और न बोलता।

चूंकि रूपकिशोर को अब रोज़गार प्राप्त हो गया था इसलिये उसके विवाह के लिये लोग डाक्टर को घेरने लगे थे। डाक्टर लालची तो था ही, उसने इस अवसर से लाभ उठाना चाहा। अब जो उन्से ब्याह की बात चलाता, डाक्टर एक दम दस हजार रुपये नक़द एक मुश्त लेने की बात कह देते।

अन्त में नागपुर के सेठ बाबू पन्नालाल ने हिम्मत भरी, लड़का सुशील, सुशिक्षित, घर-बार-खानदान वैभव सब कुछ। पन्नालाल दस हजार रुपये देने को तैयार हो गये और बड़े बूढ़ों में बात पक्की सी हो गई। लेकिन मीना ने जब रूपकिशोर को इस का हाल सुनाया तो वह चोंक पड़ा। मेरा सौदा हो गंया और मुझे मालूम नहीं। रूपकिशोर ने माँ से कह दिया कि वह रुपये के लालच में आंख मींच कर कुँए में हरगिज़ नही गिरेगा। माँ ने डाक्टर को बताया तो डाक्टर ने हंसी में टाल दिया कि शुरू में सब लड़के ऐसा ही कहते हैं।

रूपकिशोर अस्वस्थता का बहाना करके घर से किसी पहाड़ी स्थान के लिये रवाना हो गया और मनोहर को साथ लेकर नागपुर जा पहुँचा। रूपकिशोर का मत था कि बिना लड़की को भली प्रकार देखे-परखे केवल रुपये के आधार पर ही अपनी जिन्दगी बरबाद नहीं कर देनी चाहिए। अतः उसने और मनोहर ने इस के लिये एक उपाय सोचा।

ये दोनों वहां एक छोटे और सस्ते से होटल में रहने

लगे। पहिले मनोहर ही सेठ पन्नालाल के यहां किसी नौकरी की तलाश के लिये गया और उसे बाग में मालीगीरी की जगह मिल गई और दो–एक दिन बाद उसने कह–सुनकर रूपकिशोर को भी सेठ जी के यहां कोचवानी पर नौकर रखवा दिया।

रूपकिशोर और मनोहर ने अपनी दाढ़ी और मूंछें बढ़ा कर सूरत बदल ली थी। रूपकिशोर होशियार, ईमानदार और बा सलीका नौकर साबित हुआ और जल्दी ही सेठ जी का कृपा–पात्र बन गया। रूपकिशोर कोचवानी के अतिरिक्त अन्य घरेलू काम भी करने लगा।

सेठ जी की इकलौती पुत्री लिली थोड़ी पढ़ी हुई थी लेकिन पैसे के घमण्ड में चूर थी। उसे भारतीय सभ्यता से नफरत थी और वेश–भूषा व भाषा से अंग्रेजियत में पूरे तौर से पगी हुई थी। देखने में बहुत सुन्दर नहीं लेकिन बनाव श्रंगार पाउडर आदि की सहायता से परी बनने की चेष्टा करती थी। क्योंकि सेठानी मर चुकी थीं इसलिये सेठ जी का लाड़–प्यार और भी अधिक था और इस प्यार ने ही उसे मन चाहे तरीके पर जाने की स्वतंत्रता दी थी। लिली के पास दिन भर तरह–तरह के लड़के–लड़कियों की भीड़ रहती– रंग रेलियां होतीं और लिली भी औरों के घर या क्लब में तितली की तरह उड़ती फिरती।

लिली पहिले तो रूपकिशोर को प्रत्येक काम पर झिड़का करती लेकिन जल्दी ही रूपकिशोर की जवानी, अच्छी तन्दुरस्ती और तमतमाता–सा चेहरा उस की आँखों में घर करने लगा और वह अब अधिक से अधिक रूपकिशोर के साथ अकेले में रहने और दो–दो बात करने की कोशिश करती।

अभी तक लिली अपनी मोटर में ही अधिक घूमा करती थी। लेकिन अब उसे घोड़ा गाड़ी अधिक पसन्द आने लगी और अब वह अपनी सहेलियों के बजाय निर्जन पार्कों में अकेले रूपकिशोर के साथ घूमना अधिक पसन्द करती। रूपकिशोर

गाड़ी पर लिली को बैठा कर गाते हुये गाड़ी हांकता। रूप का यह गाना लिली को बहुत पसन्द आता। शुरू–शुरू में वह अपने तौर तरीकों की तारीफ करती फिर धीरे–धीरे प्रेम की बातें बढ़ने लगीं और एक दिन लिली ने आख़िर कह ही दिया कि मेरे पीछे इतने लड़के फिर रहे हैं उनमें से किसी के चेहरे पर भी तुम्हारा–सा तेज नहीं है। काश! तुम किसी बड़े घर में पैदा हुए होते !

रूपकिशोर लिली की बातें सुनता और भोलेपन से एक बे पढ़े देहाती की तरह उत्तर देता कि मैं हिन्दुस्तानी रीत–रिवाजों को पसंद करता हूँ। लिली समझाती और कभी झुंझला पड़ती।

सेठ पन्नालाल की कोठी पर सफाई और सजावट हो रही थी। आज पूना के डाक्टर बैजनाथ उनकी पत्नी सुधा और लड़की मीना अपनी नई होने वाली बहू को देखने आ रहे थे। सेठ जी खुद काम में लगे थे। मनोहर और रूपकिशोर भी गमलों को ठीक कर रहे थे। रूपकिशोर ने अपनी गाड़ी को और साफ किया तथा सजाया, चमकाया और दस बजे की गाड़ी पर आने वाले मेहमानों को लेने चला गया।

डाक्टर ने रूपकिशोर को भी तार दे दिया था कि वह उस दिन नागपुर सेठ जी के यहां पहुंच ले। वह तार पहाड़ से इन के मित्र ने (जिनका इन्होंने पिता को पता दिया हुआ था) इन्हें ही डायरेक्ट कर दिया। वह तार भी आज बड़ी कठिनाई से इन्हें मिल गया। रूपकिशोर और मनोहर ने सोचा कि ठीक पार्टी के समय प्रकट हो जाना चाहिए अपने असली रूप में।

ठीक समय पर गाड़ी आ गयी। मेहमान उतरे। कुलियों ने सामान उतारा। सेठ जी के एक दूर के साले, जो मुनीम और कर्ता–धरता भी थे, ने डाक्टर साहब का स्वागत किया।

सेठ जी की मोटर भी खड़ी थी लेकिन मीना ने घोड़ा गाड़ी पर बैठना चाहा क्योंकि उस पर से बाज़ार का दृश्य देखती हुई वह जाना चाहती थी। सब लोग घोड़ा गाड़ी पर ही बैठे।

रूपकिशोर ऐसा नहीं समझता था नहीं तो वह हरगिज़ स्टेशन न आता। वह तो समझता था मुझे सामान लाना होगा लेकिन इस समस्या को देख कर वह घबड़ा गया किन्तु कर क्या सकता था। अपने मुँह को छिपाता जल्दी–जल्दी गाड़ी बढ़ाये चला आ रहा था कि एक चौराहे पर सिपाही चिल्लाया गाड़ी रोक दो। तब रूपकिशोर को होश आया कि मैं बिना हाथ देखे ही आगे बढ़ आया हूँ।

रूपकिशोर को सिपाही ने फटकारा, चालान की धमकी दी, नाम और बल्दियत बोलने को कहा, डाक्टर ने सिपाही से माफ कर देने को कहा लेकिन जब सिपाही उन्हें भी उल्टी–सीधी सुनाने लगा तो डाक्टर को गुस्सा आ गया और वह कोचवान से कहने लगे कि बताता क्यों नहीं तू अपना नाम और बल्दियत। देखते हैं क्या फाँसी होगी? यहां क्या कोई एक्सीडेंट हो गया है?

रूपकिशोर ने दाढ़ी–मूँछें बढ़ाकर, कनपटी पर सफेद पट्टी बांध कर शक्ल तो कुछ–कुछ बदल–सी ली थी लेकिन आवाज़ बदलना कठिन था। मीना ने रास्ते में बाजार या किसी बड़ी बिल्डिंग के नाम पूछे थे जिसकी रूपकिशोर ने अनसुनी कर दी थी लेकिन अब क्या हो। लोगों की अच्छी खासी भीड़ जमा हो चली थी। इतनी देर में मामा जी गाड़ी में सामान लदवा कर पीछे से आ गये और गाड़ी को देख कर उतर पड़े। मामा भीड़ को चीरते हुये सिपाही के पास पहुँचे और पाँच रुपये का नोट जेब में डालते हुए बोले यह सेठ जी की गाड़ी है। सिपाही ने मुस्कराकर कहा तो इसकी जुबान क्या टूटी है बताया क्यों नहीं। गाड़ी आगे बढ़ी। रूपकिशोर और मनोहर दोनों न उनको कोठी पर उतार कर गाड़ी खाली की और सीधे अपने होटल पहुँचे।

होटल में बाल बनवाये, नहाये–धोये, बढ़िया कपड़े पहिने और ठीक पाँच बजे सेठ जी की कोठी पर जा पहुँचे। कोठी के लान में पार्टी का प्रबन्ध था। डाक्टर, सेठ के रिश्तेदार आदि सब

बैठे इन का इन्तजार कर रहे थे। पहाड़ की तरफ से आने वाली गाड़ी का समय तो निकल गया था। संभव है न आयें? लेकिन डाक्टर को विश्वास था कि मेरी हुक्म उदूली नहीं करेगा।

वैसे डाक्टर ने मंजूरी दे दी थी, मीना उछल कर भाभी की गोद में जा बैठी थी लेकिन अभी रूपकिशोर की सहमति जानना बाकी थी। डाक्टर को यहां भी विश्वास था कि वह मेरे कहने को टालेगा नहीं।

जब रूपकिशोर पार्टी में दाखिल हुए तो सब लोग प्रसन्नता से उछल पड़े। डाक्टर ने आगे बढ़कर उसे छाती से लगाया। रूपकिशोर ने पिता के पैर छुए और आगे बढ़ कर माता जी के भी। उपस्थित लोग दंग थे और लिली इस हिन्दुस्तानी दकियानूसीपन को देख कर घृणा से नाक–भों सिकोड़ रही थी।

रूपकिशोर को लिली वाली मेज़ पर ही बिठाया गया। रूपकिशोर जब लिली के सम्मुख आया तो उसने हाथ जोड़ कर उन्हें भी नमस्ते किया। लिली शर्म से गढ़ गई। लिली ने रूपकिशोर को पहिचान लिया। इतने सुन्दर लड़के को देख कर जहां सब खुश थे वहां लिली को अपने ऊपर इतनी घृणा उत्पन्न हुई कि वह वहां और न बैठ सकी और अपने कमरे में जा पड़ी।

जब सब तरह से बात हो गई तो सुधा ने रूपकिशोर के पास आकर पूछा, 'तुझे लड़की पसन्द है न?' रूपकिशोर ने कहा कि इस मामले में पहिले उस लड़की से ही पूछो कि वह मुझ जैसे हिन्दुस्तानी की सेवा करना स्वीकार करेगी भी या नहीं? मेरे ख्याल से इसकी शादी किसी अंग्रेज से हो तो अच्छा है। माँ ने सुना तो दंग रह गई। डाक्टर के आगे दस हजार और यह सब जायदाद नाच गई। उधर लड़की को देखा तो वह सब कपड़े उतारे, बाल खोले पागलों की तरह कमरे में घूम रही थी। 'धूर्त मुझे परखने के लिये कोचवान बना था–कितना सीधा–भोला– इस से अब मैं हरगिज शादी नहीं करूँगी क्योंकि इस की निगाह

में तो मैं एक ज़लील, गिरी हुई लड़की हूँ।

लिली के साफ इनकार कर देने पर सारा खेल समाप्त हो गया। सेठ ने, माम्मा ने, मित्रों ने लिली को समझाया लेकिन वह टस से मस न हुई। इस इनकार का कारण किसी को भी पता न लग सका। डाक्टर ने इस अपमान के लिये सेठ को खूब डांटा। बिचारा सेठ विवश था। वापिस लौटे तो और सब तो दुखी थे लेकिन रूपकिशोर प्रसन्न था।

जब से ऊषा को यह मालूम हुआ कि रूपकिशोर डाक्टर का ही लड़का है तब से उसकी श्रद्धा, भक्ति उसके प्रति बहुत बढ़ गई थी। लता की बीमारी के कारण काम कम हुआ और खर्चा अधिक। परिणामतः मकान का किराया न दे सकी। एक दिन मकान वाले ने आकर किराये में इनकी मशीन उठवा ली और तुरंत मकान से निकाल दिया। यह लोग रोए–पीटे लेकिन कुछ असर नहीं हुआ। दोनों माँ–बेटी असहाय बाहर खड़ी सोच रही थीं कि कहां जायें क्या करें? इतने में रूपकिशोर आ पहुंचा। उसने इन लोगों को देखा तो गाड़ी में से उतर पड़ा और अपने साथ मकान पर ले आया।

नौकरों की कोठरियों में से एक खाली थी। इसने उसे ही दे देने की सोची थी लेकिन जब डाक्टर से जिक्र किया तो लोभी डाक्टर ने साफ मना कर दिया। इन छोटी–छोटी कोठरियों का भी किराया और पगड़ी खूब मिलती है। इन से क्या आशा थी लेकिन रूपकिशोर ने इन्हें वहां पहुंचा ही दिया। लता ने बहुत मना किया कि हम ग़रीबों के कारण कोई क्लेश न लो लेकिन रूपकिशोर नहीं माना।

ऊषा के इस कोठरी में आ जाने के बाद डाक्टर के यहां की आमद और बढ़ गई। अब रूपकिशोर भी कभी–कभी लता की ख़ैर ख़बर पूछ जाता। डाक्टर के और नौकरों को यह बात अखरने लगी और उन्होंने सुधा और डाक्टर से उल्टी–सीधी बातें

लगानी शुरू कर दीं। नौकरों ने एक ओर ऊषा को चोर और बदचलन औरत कहना शुरू किया तो दूसरी ओर रूपकिशोर को उसके चंगुल में फंसा हुआ घोषित कर दिया।

रूपकिशोर जब कभी किसी मुकद्दमे की पैरवी के लिये बम्बई या कहीं और जाता तो लता और गुड्डी के लिये कपड़े–लत्ते या कोई और चीज़ ज़रूर लाता। उसने नियम बना लिया था कि बाहर से आने वाली आमदनी में से कुछ हिस्सा मैं लता को दूंगा। लता इन चीज़ों को लेने से इनकार करती लेकिन जब रूपकिशोर बहुत आग्रह करता तो वह उठा कर एक ट्रंक में रख लेती। उसे गुड्डी के ब्याह की बड़ी चिन्ता थी। पढ़ी–लिखी, होशियार, सुन्दर सब कुछ लेकिन ग़रीबी की वजह से उसका किसी से ब्याह की बता करने का मुँह ही नहीं पड़ता था और कहती भी तो किससे?

एक दिन – रात को ग्यारह बजे की ट्रेन से रूपकिशोर कहीं बाहर से किसी केस को करके लौट रहा था कि स्टेशन से उस के पीछे कुछ बदमाश लग गये। वह स्टेशन से घोड़ा गाड़ी पर आया। अपने फाटक पर उसने गाड़ी वाले को विदा किया और फाटक खुलवाने हेतु आगे बढ़ा ही था कि किसी ने उस के सिर पर एक भारी चोट की। रूपकिशोर चीख मार कर बेहोश हो गिर पड़ा। बदमाश उसे लूटकर मोटर में सवार हो ग़ायब हो गये। चीख़ की आवाज़ ऊषा ने सुनी तो उसने अपनी कोठरी से बाहर निकल कर देखा। वहां कुछ न दीखा। हां बाहर सड़क पर मोटर के स्टार्ट होने की आवाज़ सुनाई दी। वह दबे पांव आगे बढ़ी कि उसने फाटक के बाहर बिजली की रौशनी में रूपकिशोर को पड़े देखा। उसने बड़ी कठिनाई से भारी फाटक खोला, देखा तो वह बेहोश पड़ा था। ऊषा ने आकर जल्दी से लता को बताया, और नौकरों से कहा। नौकर उठ कर वहां पहुंचे और उसे उठा कर कोठी में लाये।

नौकरों ने इस अवसर का लाभ उठाना चाहा और पूरा

दोष ऊषा के सिर मढ़ दिया। कहा– इस के और यार यहां आये थे इधर बड़े बाबू आ गये बस। डाक्टर ने प्रातःकाल पुलिस को इत्तला कर दी। थानेदार आये नौकरों के बयान और गवाहियां हुई और कोठरी की तलाशी ली गई। ट्रंक में बढ़िया साड़ियों ने सबूत दिया कि ऊषा बदचलन है और ऊषा को हिरासत में ले लिया गया। डाक्टर की राय में भी ऊषा की ही यह शरारत थी। लता रोती रही।

दोपहर के बाद जब रूपकिशोर को होश आया तो उसे मीना ने सब हाल बताया। गुड्डी की गिरफ्तारी का भी हाल बताया। गुड्डी की गिरफ्तारी की बात सुन कर रूपकिशोर बौखला उठा। वह उसी कमजोरी की हालत में उठा और फिर बेहोश होकर फर्श पर गिर पड़ा। सिर से खून बहने लगा। डाक्टरों ने बिल्कुल हिलने को मना कर दिया और नर्सों का पहरा बढ़ा दिया।

तनिक स्वस्थ होने पर रूपकिशोर पिता से निर्दोष अबला को इस तरह झूठा मामला बना कर फंसा देने पर भिड़ गया। बात बढ़ गई। रूपकिशोर ने नौकरों को बुलाकर पूछा तो सब ने गुड्डी को ही एक स्वर में दोषी ठहराया। रूपकिशोर इसे बर्दाश्त नहीं कर सका और लड़खड़ाता हुआ लता की कोठरी में पहुंचा किन्तु वहां लता नदारद थी।

रूपकिशोर कोठी से बाहर निकला। मीना ने माँ से कहा। माँ रोती हुई आयी और डाक्टर से कहा कि पकड़ लाओ उसे वह बहुत कमजोर है। डाक्टर गुस्से में भरा बैठा था। उसने उसे भी फटकार दिया। डाक्टर के रुख को देख कर नौकर इधर–उधर खिसक गए। बिचारी सुधा सड़क पर आकर इधर–उधर देखती रही। उसने आवाज़ दी पर कहीं पता नहीं। अतः विवश हो घर लौट आई और डाक्टर पर बरस पड़ी।

थोड़ी दूर चलने पर रूपकिशोर को चक्कर आ गये और

वह एक ओर फुटपाथ पर बैठ गया। अब वह कहां जाये और कैसे क्या करे? लता न जाने कहां गई? कहीं नदी में .........। उसने इशारे से गाड़ी बुलाई और बड़ी कठिनाई से उस में बैठा। रास्ते से मनोहर को लिया और नदी की ओर चल दिया। बहुत खोजने पर भी पता न लग सका। आख़िर वह कहां गई।

रूपकिशोर ने घर न वापिस होने का संकल्प कर लिया और शहर से दूर एक टूटे–फूटे मन्दिर में जाकर पड़ गया। बिचारे मनोहर ने बहुत आग्रह किया कि मेरे घर चलो लेकिन उस ने स्वीकार नहीं किया। मनोहर साईकिल पर सवार होकर रूपकिशोर को दवा और खाना–पीना दे आता था।

डाक्टर की तरफ से गुड्डी पर चोरी का, उनके लड़के को बहकाने का अपने दूसरे साथियों की मदद से रूपकिशोर पर कातिलाना हमला करने का मुकद्दमा चलाया गया। सबूत में और नौकरों के बयान हुए। पुलिस की रिपोर्ट पेश हुई। सफाई की तरफ से कोई वकील नहीं, कोई सुविधा और व्यवस्था नहीं। मजिस्ट्रेट ने मुल्ज़िमा की ओर तीखी दृष्टि से देखा, तुम्हें सफाई में कुछ कहना है। ऊषा ने बढ़िया अंग्रेजी में मजिस्ट्रेट को फटकारते हुए कहा, 'जहां पैसे के अंधे अपना धर्म और ईमान खो चुके हों वहां सफाई की कोशिश करना अन्याय को ही बढ़ावा देना है।'

ऊषा की बढ़िया अंग्रेजी सुनकर मजिस्ट्रेट, थानेदार, डाक्टर, वकील सब हक्के–बक्के से हो उसका मुँह ताकने लगे। और लोग भी जो इधर–उधर ऊँघ रहे थे खड़े होकर गुड्डी को देखने के लिये उतावले हो उठे। नौकरों के तो छक्के ही छूट गये। सिखाई या रटाई हुई अंग्रेजी इतनी अच्छी? डाक्टर आश्चर्य करने लगा। ऊषा ने और आगे कहा ' यदि ग़रीबी ही अपराध नहीं है तो मैं पूर्णतः निर्दोष हूँ। इस की सफाई में केवल रूपकिशोर की ही गवाही पेश की जा सकती है। अगली तारीख़ पर

रूपकिशोर की गवाही हुई। उसने सारा हाल सही–सही बता दिया और ऊषा निर्दोष साबित हुई तथा रिहा कर दी गई। लोगों को कौतूहल था प्रसन्नता नहीं।

लिली के मना करने पर सेठ को बड़ा अफसोस हुआ। लेकिन मामा के दिमाग़ में एक विचार उत्पन्न हुआ। क्यों न गोपी को ............. गोपी मामा का दूर का रिश्तेदार लड़का था। जो जन्म से आवारा था और किसी अंग्रेज अफसर के ख़ानसामा के रूप में विलायत हो आया था। अब मामा की नीयत खराब हो चुकी थी और वह इस जायदाद को अपने कब्ज़े में करने की कोशिश करने लगा था। मामा ने अब धीरे–धीरे गापीलाल की तारीफें करनी शुरू कर दीं और एक दिन गोपी को सिखा पढ़ा कर लिली से भेंट करा दी। गोपी की शक्ल, पहनावा और लच्छेदार बातों ने शीघ्र ही लिली को मोहित कर लिया।

सेठ इस लड़के के साथ लिली की शादी करने को तैयार न था। लेकिन लिली पर मामा का जादू सवार हो गया था और एक दिन मामा की सहायता से गोपी लिली और उसका बहुत–सा रुपया पैसा, गहना लेकर बम्बई भाग आया। लिली की इस हरकत से सेठ को बड़ा धक्का लगा और उसने खटिया पकड़ ली। मामा ने इस अवसर से लाभ उठाया। सारा बिजनेस धीरे–२ अपने नाम करा लिया। जो झगड़े की जायदाद हो सकती थी उसे बेच कर रुपये अपने कब्जे में कर लिये और बहुत से झूठे कागजों पर सेठ के दस्तख़त करा लिये।

लिली के जाने से ही सेठ अधमरे हो गये थे और अब मामा के इस विश्वासघात को देख कर तो वह और भी तड़पने लगे लेकिन कर कुछ न सकते थे।

सेठ के मरने के बाद मामा का संपूर्ण जायदाद पर राज्य हो गया।

लिली–गोपी के कुछ दिन ऐश से बीते लेकिन धन समाप्त

होने पर संकट आने लगा और थोड़े समय बाद ही विकराल रूप धारण कर लिया। अब दोनों में बात–बात पर झगड़ा होता। एक दिन गोपी, लिली को छोड़ कर गायब हो गया। अनाथ लिली सबकुछ गंवाकर नागपुर वापिस आ गई। पिता मर चुके थे और मुनीम मामा कब्जा किये बैठे थे। लिली ने घर का वातावरण देखा तो होश उड़ गए। हर नौकर उसे घृणा की दृष्टि से देखता और ताने देता। स्वयं मामा का व्यवहार असहनीय। लिली कभी अपने ऊपर झुंझलाती कभी गोपी के ऊपर। मामा ने साफ कह दिया कि वह ऐसी बदचलन लड़की को एक पैसा देना पसन्द नहीं करते। अब लिली के लिए चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था। इतनी बड़ी सम्पत्ति की स्वामिनी होते हुए भी लिली पैसे–पैसे को मोहताज हो गयी। लिली ने अपनी संपत्ति के लिये जब मामा से कहा तो उन्होंने सेठ का एक वसीयतनामा दिखाया जिसमें लिखा था मेरे पैसे या जायदाद में से लिली को एक फूटी कौड़ी भी न दी जाये।' और इस वसीयतनामे में ही मामा के नाम समस्त चल–अचल संपत्ति कर दी गई थी।

लिली ने अपना सिर पीटा और रात को सदा के लिये घर छोड़ कर बम्बई के लिये रवाना हो गई, गोपी को ढूँढने के लिये। यदि गोपी मिल जाये तो लिली उस का सिर फोड़ दे और अपना भी।

लिली ने बम्बई में उसकी बहुत तलाश की लेकिन वह न मिला। आख़िर लिली भिखारियों की तरह नगर में घूमने लगी। अब उस की वेश–भूषा–शक्ल सब कुछ तब्दील हो चुकी थी।

जब रूपकिशोर गुड्डी को अदालत से तांगे में बिठाकर घर पहुंचा तो उसे डाक्टर का पर्चा फाटक पर ही एक नौकर ने थमा दिया। उस पर लिखा था 'इस भिखारिन की बदचलन लड़की को फिर यहां लाने की कोशिश मत करना नहीं तो तुम्हें भी मेरे द्वारा एकत्रित की हुई जायदाद से हाथ धोने पड़ेंगे।' रूपकिशोर ने



Indian Institute of Advanced Study
ACC NO.
DATE 14.2.2003
SHIMLA

तांगे को लौटा दिया और गुड्डी को एक होटल में पहुंचा कर स्वयं घर आया। डाक्टर ने रूप को समझाया। ऊंच–नीच दिखाई, और धमकाया भी लेकिन रूप पर कोई असर नहीं हुआ। उसने साफ इनकार कर दिया कि मैं आपके एकत्रित किये हुये वैभव का सुख भोग नहीं करना चाहता हूँ।

कल उसे एक बड़े मुकद्दमे के सिलसिले में बम्बई जाना था। इसलिये उसने जरूरी कागज़ों को एकत्रित किया और अपनी अटेची एवं बिस्तरे को लेकर घर से रवाना हो लिया। हां अबकी बार उसने मां के पैर छुए , मीना को प्यार किया और एक पर्चा लिखकर डाक्टर के कमरे में उन की मेज़ पर रख दिया।

रूपकिशोर ने होटल से गुड्डी को लिया और बम्बई के लिये रवाना हो लिए। गुड्डी बड़ी दुविधा में थी लेकिन कोई दूसरा सहारा न देख विवश हो रूप के साथ चल दी। गुड्डी अपनी मां की याद करके रो पड़ी।

लम्बे अर्से से फंसे मुकद्दमे में सफलता मिली। मुवक्किल एक बड़ा सेठ था। वह रूपकिशोर की मेहनत से खुश होकर एक बड़ी रकम मेहनताने के अलावा और देता था। रूप ने धन और यश प्राप्त हो जाने के बाद बम्बई में अपनी वकालत शुरू कर दी। गुड्डी घर गृहस्थी के कामों के अतिरिक्त रूप को उस के कामों में भी सहायता देती। रूप की मेहनत और ईमानदारी की शोहरत यहां भी फैल गई और थोड़े दिन में ही उसकी प्रेक्टिस अच्छी चल पड़ी।

रूपकिशोर छोटे मकान को छोड़ कर बड़ी कोठी में आ गया। अब उसके पास नौकर चाकर, घोड़ा गाड़ी सब कुछ थे। गुड्डी तन–मन से रूप की भक्तिपूर्वक सेवा करती। कितने ही नौकर होने के बावजूद भी खाना–पीना और रूप की सेवा वह स्वयं ही करती। रूप जब बहुत कहता तो हंस कर उत्तर देती सेवा का अवसर सौभाग्य से ही मिलता है।

कार्य अधिक होने की वजह से या एक दिन ठण्ड लग जाने से गुड्डी को बुखार रहने लगा किन्तु उसने रूप को प्रकट न होने दिया और सेवा में पूर्ववत ही लगी रही। किन्तु जब एक दिन रूप को मालूम हुआ तो वह बहुत झल्लाया और उसी समय से वह किसी ऐसी नौकरानी की तलाश में रहने लगा जो उसके कचहरी जाने के बाद उस की देखभाल करती रहे।

एक दिन जब रूप कचहरी से लौट रहा था तो कोठी के फाटक पर फटे चीथड़ों से लिपटी हुई एक नवयुवती खड़ी दिखाई दी। वह कुछ कहना चाहती थी लेकिन रूप को देखते ही उसे चक्कर–सा आ गया। वह अपने को न संभाल सकी और कितने ही दिन की भूखी प्यासी वहीं गिर पड़ी। भिखारिन लड़की ने रूप को पहिचान लिया किन्तु रूप न पहिचान सका। रूप ने नौकरों की सहायता से उसे कोठी में पहुंचाया। डाक्टर को बुलाकर उपचार कराया, पहिनने को गुड्डी के कपड़े दिये।

दो दिन बाद वह पूर्ण स्वस्थ हो गई। रूप ने उसका हाल जानना चाहा। उत्तर में वह रो दी। रूप समझ गया कोई समय की सताई हुई है अतः उसने फिर इस जिक्र को छेड़ कर उसका दिल नहीं दुखाना चाहा। रूप ने उसे अपने यहां गुड्डी की सेवा के लिये नौकर रख लिया। यह लड़की लिली थी और इस ने अब अपना नाम गोमती बताया था।

रूप चला जाता तो गुड्डी और गोमती में खूब बातें होतीं। दोनों दुखियारी थीं। पिछले दिनों को याद करके दोनों कभी रोतीं कभी हंसतीं। गोमती का ख्याल था कि रूप की शादी गुड्डी के साथ हो चुकी है लेकिन कितने ही दिन बाद भेद खुला तो आश्चर्य का ठिकाना न रहा। गोमती ने अपना पिछला हाल थोड़ा बहुत बता तो दिया था लेकिन असली नाम पता नहीं दिया था। किन्तु गुड्डी यह समझ गई थी कि यह पहिले धनवान की लड़की थी। गोमती गुड्डी की बड़े प्रेम से सेवा करती और हर तरह से

उसे प्रसन्न रखने की कोशिश करती। गोमती अब नौकरानी नहीं गुड्डी की सहेली थी।

अब रूप अधिकतर बाहर के कमरे में ही बैठे काम करते। बहुत कम अन्दर आते। गोमती भी रूप के सामने कम पड़ती लेकिन उसके हृदय में रूप के प्रति श्रद्धा–आदर और प्रेम उत्पन्न हो गया था।

गोपी, लिली को छोड़ भाग खड़ा हुआ और बम्बई के एक उप नगर में पहुंच कर एक छोटे से होटल में नौकर हो गया। यहां इसका संग बदमाशों से हो गया जो बम्बई और आस–पास के शहरों में, चलती ट्रेनों में चोरी किया करते थे। गोपी स्वयं लोफर था इसलिये उसे इन लोगों के दल में शरीक होने में देर नहीं लगी। इस दल का सरगना चम्पू नायक था।

बम्बई में कितनी ही जगह चोरी कर लेने के बाद दल की निगाह रूप की कोठी पर जा लगी। नायक ने रूप के एक सीधे से नौकर से दोस्ती बढ़ाई। नौकर बुधुआ पचास वर्ष का था। बीबी मर चुकी थी। बर्सों से दूसरी शादी के लिये दीवाना था। बस दल के लोगों ने उसे इसी लालच में फंसाया और रूप की कोठी के अन्दर के सब हाल–चाल जान लिये।

एक दिन जब रूप किसी काम से बाहर गया हुआ था तब मौका पा कर बुधुआ को रात के 11 बजे चुपचाप फाटक को खोल देने को तैयार कर लिया। उसे बताया कि तुम्हारी बीबी को यहीं दिखाने को ले आयेंगे। बुधुआ प्रसन्नता पूर्वक राज़ी हो गया।

नायक ने गोपी को स्त्री बनाया और एक व्यक्ति को साथ लेकर कोठी पर जा पहुंचा। बुधुआ बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहा था। इसलिये ज़रा किवाड़ खटकते ही उसने तुरंत ताला खोल दिया। नायक गोपी को लेकर बुधुआ की कोठरी में जा पहुंचे और दूसरा कोठी में एक खिड़की का शीशा तोड़कर अन्दर घुस कर अपनी कार्यवाही करने लगा। इत्तफाक से रात को १

बजे की ट्रेन से रूप आ पहुंचा। फाटक खुला हुआ देखा तो आश्चर्य हुआ। ताला–कुंजी वहीं लटक रही थी अतः उस ने ताला बन्द कर दिया। बरामदे में आया तो दरवाजे तो बन्द लेकिन उस के दूसरे कमरे में रोशनी हो रही थी। रूप को शक हो गया। उस ने अटेची खोलकर टार्च और रिवाल्वर निकाल लिया और एक दम जोर से बिजली की घंटी दबा दी। घण्टी बजी तो अन्दर पीछे की तरफ सोती हुई गुड्डी और लिली जगीं। इधर चोरों ने घण्टी की आवाज़ सुनी तो माल–मता छोड़कर खिड़की से कूद–कूद कर अंधेरे में छिपते हुए फाटक की तरफ भागे। लेकिन वहां ताला बन्द पाया तो किसी तरह से पेड़ पर चढ़ कर दीवार फांद कर भाग गये। रूप ने बुधुआ को आवाज़ दी। बुधुआ ने इस बेवक्त मालिक की आवाज सुनी तो घबड़ा गया। इस वक्त क्या नई मुसीबत आ गई। उसने जल्दी–जल्दी नई बीबी को खाट के नीचे छिपाया और खुद बाहर निकला।

गुड्डी ने किवाड़ खोलने को बिजली जलाई तो कमरे का सब सामान तितर–बितर। गुड्डी ने लिली को बुलाया और घबड़ाते हुई आकर दरवाजा खोला और रूप को बताया।

और लोग तो भाग गये लेकिन गोपी खाट के नीचे छिपा रह गया। जब चारों तरफ चोरों को तलाश कर लिया तो रूप बुधुआ की तरफ हाथ में रिवाल्वर लिये पहुंचा। टार्च से कोठरी में देखा तो शक हुआ। बुधुआ ने बताया मेरी नई होने वाली बीवी है यह। इसे आज दो आदमी अभी पहुंचा गये हैं। रूप को समझने में देर नहीं लगी। गोपी बाहर निकाला गया। बाहर निकलते ही मौका देख गोपी तेजी से फाटक की तरफ दौड़ा लेकिन रूप ने हवा में गोली छोड़ते हुए कहा ख़बरदार ऐसा मत करना नहीं तो जान खो बैठोगी। रात को गोपी को बाँध कर एक कमरे में और बुधुआ को दूसरे कमरे में बन्द कर दिया।

प्रातःकाल रूप ने बुधुआ से सब हाल पूछा और उस ने भी

सच्चा–सच्चा हाल बता दिया। रूप ने नई स्त्री गोपी से स्वयं बातें न कर लिली को हुक्म दिया। लिली भय से कांप रही थी। रूप स्वयं वहीं पास में खड़ा था। गोपी ने लिली को देखा तो होश उड़ गये। उसने किसी बात का भी जवाब न दिया बल्कि मुँह और छिपा लिया। आखिर विवश हो लिली ने उसके मुंह का कपड़ा हटा दिया। लिली मुंह देखते ही एक दम चीख पड़ी। रूप तुरंत पास जा पहुंचा। रूप ने देखा पुरुष। लिली चली गई और अब रूप ने रिवाल्वर सीधा करके कहा कि यदि तुमने सही बात न बताई तो ....................।

गोपी ने सब हाल कह सुनाया लेकिन लिली के साथ रहने वाली बात न कही। रूप ने पुलिस को बुलाकर गोपी और बुधुआ को पुलिस के हवाले कर दिया।

एक दिन गुड्डी ने रूप को बताया कि यह लड़की नागपुर के एक सेठ पन्नालाल की है। रूप ने आश्चर्य से पूछा अच्छा तो लिली है यह। मेरे यहां नौकरी करके बदला लिया है शायद। अब लिली को सारी दास्तान बतानी पड़ी। रूप ने तुरंत लिली की ओर से उसके मामा मुनीम पर मुकद्दमा दायर कर दिया। यही सेठ की लड़की है इसके सबूत में विवाह सम्बन्धी पत्र व्यवहार और फोटो पेश कर दिये। लिली मुकद्दमा जीत गई। मामा को चार सौ बीसी करने के जुर्म में भारी सज़ा हुई।

रूप ने गोपी को भी ज़मानत पर छुड़ा लिया। गोपी अपने किये पर बुरी तरह पछता रहा था। रूप ने गोपी को लिली की जायदाद की देखभाल के लिये नियुक्त करके नागपुर भेज दिया।

एक दिन लिली ने रूप से कहा आखिर बहिन गुड्डी को कब तक तपस्या और करनी होगी।

एक दिन कोठी पर बड़ी धूमधाम थी। शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति और सरकारी अफसर सब मौजूद थे। रूप के माता–पिता को भी आने के लिये लिखा था लेकिन उन्होंने लिख भेजा कि मैं

ग़रीब भिखारिनी की लड़की से शादी करने वाले को अपना लड़का मानने को तैयार नहीं।

जयदेव, मनोहर, गोपी सब पार्टी के प्रबन्ध में लगे हुये थे। रूप सब का स्वागत कर रहा था। धीरे–धीरे गुड्डी पधारी और एक कुर्सी पर बैठ गई। सामने की कुर्सी पर बैठी मालती और रायसाहब इसे बड़े गौर से देख रहे थे। मालती ने उठ कर गुड्डी की गर्दन को बड़े ध्यान से देखा और फिर एक दम चीख़ पड़ी। मेरी गुड्डी मिल गई– मेरी गुड्डी मिल गई। लोगों ने आश्चर्य से देखा। गुड्डी को भी लता की कही बात याद आ गई। रायसाहब संक्षेप में पिछला वृतान्त सुनाने लगे।

मालती ने गुड्डी का हाथ रूप को थमा दिया। दोनों ने माता–पिता के पैर छुए। रूप के कहने पर रायसाहब ने लिली का हाथ गोपी को थमा दिया और उन्होंने भी पैर छुए। इस समय सन्यासिनी के भेष में आकर एक स्त्री ने मालती के पैर छुए, मालती चौंक पड़ी। सन्यासिनी बोली अपराधिनी मैं हूँ। गुड्डी उसके गले से लिपट गई।

ऊषा, लिली और गोपी घोड़ा गाड़ी पर सवार होकर घूमने चल पड़े और खुशी में रूप गाड़ी स्वयं हांक रहा था। लिली को पुराने दिन याद आ गए और वह रूप से कहने लगी – " ऐ !!! कोचवान! गाना सुनाओ।"

# डॉ आनन्दी प्रसाद माथुर : एक परिचय

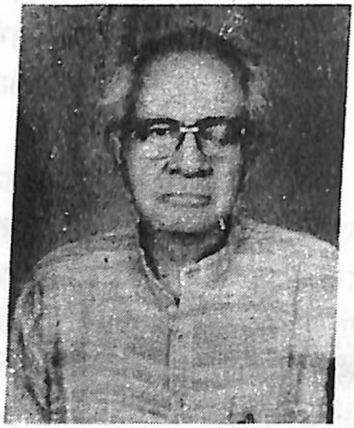

हिन्दी-जगत् के सुप्रसिद्ध गांधीवादी साहित्यकार डॉ. आनन्दी प्रसाद माथुर का जन्म 19 मई 1914 ई. को कानपुर में हुआ । आपके पिता मुंशी अजुध्या प्रसाद माथुर और माता श्रीमती भगवती देवी धार्मिक विचारों के अनुयायी थे । आपका बचपन आगरा में बीता । अप्रैल 1930 से राष्ट्रीय आन्दोलन, नमक

सत्याग्रह, लगान बन्दी, विदेशी माल बहिष्कार आदि में सक्रिय भाग लिया। परिणामतः पुलिस की लाठियां, तलाशियां और गिरफ्तारी हुई। भारत छोड़ो आन्दोलन में सवा वर्ष मैनपुरी जेल में रहे। अप्रैल 1946 में प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के छठे अधिवेशन (शिकोहाबाद) के स्वागत मन्त्री बने। शिकोहाबाद से राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र 'निर्भीक' का प्रकाशन एवं सम्पादन और नई दिल्ली में साप्ताहिक 'अमृत' का सम्पादन किया। 1967 से दस वर्ष तक केन्द्रीय भारत सेवक समाज में विभिन्न पदों के साथ केन्द्रीय संगठन मन्त्री तथा सोशल वर्कर ट्रेनिंग सेंटर में सीनियर इन्स्ट्रक्टर रहे। अवकाश के बाद दैनिक 'बन्दे मातरम्' में सह-सम्पादक के रूप में कार्य किया। अब स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। देश के सभी प्रतिष्ठित पत्र एवं पत्रिकाओं में अनेक रचनाएं प्रकाशित।

# प्रकाशित कृतियाँ

| | | |
|---|---|---|
| संस्मरण | बाल अजान की अर्जी | (1986), |
| | बापू के बोल | (1986), |
| | आजादी के दीवाने | (1987), |
| | समर्पित व्यक्तित्व | (1992), |
| निबन्ध संग्रह - | मुक्ति संघर्ष | (1991), |
| | इधर के रहे न उधर के | (1995), |
| कहानी संग्रह - | बदला चुका दिया | (1989), |
| उपन्यास - | खादी और आजादी | (1995), |
| जीवनी | मौलाना अबुलकलाम आजाद | (1997), |
| | गणेश शंकर विद्यार्थी | (1997), |
| | गुलजारी लाल नन्दा | (1997), |
| | अरुणा आसफ अली | (1998), |
| | वल्लभ भाई पटेल | (1998). |

बाल साहित्य - अनोखा राजहठ (1993),
थोथा पानी (1993),
मानवता की सेवा (1994),
हमारे पैगम्बर (1995),
हमारे समाज सेवी
भारत रत्न (1995),
रक्तदान(हिन्दी अकादमी के
सौजन्य से प्रकाशित) (1995),
बिल्ली की पूजा (1996),
भारत दर्शन (2000),
कोचवान (2000).

संपादित पुस्तकें - हीरालाल दीक्षित अभिनंदन ग्रंथ (1988),
एक सुमन बगिया महकाता (1989),
आमने-सामने (1991),
दिवंगत हिन्दी-सेवी -
एक मूल्यांकन (1993),
स्मृतियों के सागर (1996).

संपर्क सूत्र - सी- 2/92, यमुना विहार, दिल्ली- 110053
© 2261946

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO. 110622
DATE...14.2.2003
SHIMLA

Library IIAS, Shimla
H 028.5 M 426 K
00110622